

# बारिश में भीगती लड़कियों को देख कॉलेज के लिए बस दान कर दी



जयपुर । दो साल पहले शिशुरोग विशेषज्ञ डॉ. रामेश्वर प्रसाद यादव राजस्थान में अपने गांव चुरि जा रहे थे, जब उन्होंने रास्ते में बारिश में भीगती 4 लड़कियों को सड़क किनारे देखा। उनकी पत्नी तारावती ने उन लड़कियों को लिफ्ट ऑफर की। उनसे बातचीत में पता चला कि लड़कियां अपने कॉलेज गई थीं जो 18 किमी दूर कोटपुतली में स्थित है लेकिन फिर भी उनकी उपस्थिति बेहद कम है। इसकी वजह इलाके में अक्सर होने वाली तेज बारिश नहीं बल्कि लड़कियों को इलाके के पथरीले, गर्म और धूलभरे रास्ते पर 3 से 6 किमी तक पैदल चलना होता है, तब जाकर वह पब्लिक बस स्टॉप पहुंच पाती हैं, जहां से उन्हें कोटपुतली जाने वाली बस मिलती है।

एक छात्रा ने उन्हें बताया, 'बस में लड़के अक्सर हमसे बुरा व्यवहार करते हैं।' उनकी कहानी दंपती के दिल को छू गई। रामेश्वर प्रसाद बताते हैं, 'जब हम घर पहुंचे तो मेरी पत्नी ने पूछा कि अपन कुछ कर सकते हैं क्या? इसके बाद उन्होंने दूसरा सवाल किया कि अगर हमारी बेटी आज जिंदा होती तो उसकी पढ़ाई और शादी में हम कितना खर्च करते, करीब 20 लाख रुपये?'

डॉ. रामेश्वर बताते हैं, 'और इस तरह हमने उनके लिए एक बस खरीदने का फैसला किया।' रिटायर्ड सरकारी डॉक्टर रामेश्वर ने अपने सामान्य पीएफ से 17 लाख रुपये निकाले जो कि कुल पीएफ सेविंग का 75 फीसदी था। उन्होंने अपनी सेविंग से इसमें 2 लाख रुपये जोड़कर 19 लाख रुपये की एक सफेद टाटा स्टारबस खरीदी।

यह बस मध्य राजस्थान के जयपुर जिले के चुरि, पावला, कायमपुरा बास और बनेती गांवों की लड़कियों को कॉलेज तक पिक और ड्रॉप करती है। रामेश्वर ने उन चारों छात्राओं को 2016 में इसके उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया था। तारावती बताती हैं, 'हमारी बेटी की मौत के बाद हम कुछ सोचने समझने की स्थिति में नहीं थे लेकिन अब ऐसा लगता है कि सब कुछ पूरा हो गया।'



बेटी की पहले ही मौत हो गई थी

दंपती की शादी काफी कम उम्र में हो गई थी और जब तारा 18 साल की हुई तो उन्होंने एक बेटी हेमलता को जन्म दिया। 1976 में रामेश्वर मेडिकल एंट्रेस टेस्ट की तैयारी कर रहे थे जब उनकी बेटी को तेज बुखार हो गया। वह बताते हैं, 'मेरी पत्नी उसे एक डॉक्टर के पास ले गई जिसने बेटी को एक इजेक्शन दिया।'

वह उस खौफनाक पल को याद करते हुए बताते हैं, 'उसका शरीर नीला पड़ गया था और जल्द ही उसकी मौत हो गई।' इस सदमे से उबरने के लिए दोनों पति-पत्नी को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वह कहते हैं, 'हम एक बेटी चाहते हैं लेकिन उसके बाद हमें 3 बेटे हुए। लेकिन अब महसूस होता कि मेरे पास 50 हेमलता हो गई हैं।'

बस में छेड़खानी की वजह से लड़कियों को कॉलेज जाना नहीं था पसंद

40 सीटों वाली यह बस लड़कियों के लिए वरदान है जिन्हें रोज-रोज छेड़खानी झेलने की वजह से पब्लिक बस से कॉलेज जाना पसंद नहीं था। उनकी रोज की असुविधाजनक यात्रा से उनकी अटेंडेंस में असर पड़ता था। कॉलेज में गृह विज्ञान पढ़ाने वाली यामिनी चतुर्वेदी बताती हैं, 'पैरेंट्स अक्सर पूछते हैं कि उन्हें रोज-रोज कॉलेज जाने की क्या जरूरत है।' वह एक गरीब माता-पिता के मामले को याद करते हुए बताती हैं जो अपनी बेटी को अकेले कॉलेज भेजने के लिए बेहद चिंतित रहते थे। वह अक्सर कॉल करके पूछते थे कि अगर कॉलेज में लेक्चर हो तो ही वह अपनी वह बेटी को भेजें।

कक्षा में छात्राओं की संख्या में इजाफा

निशुल्क बेटी वाहिनी सेवा की वजह से अब क्लास में लड़कियों की संख्या में इजाफा हुआ है। कोटपुतली के श्रीमति पाना देवी गर्ल्स कॉलेज की बीए सेकंड ईयर की छात्रा अमन वर्मा बताती हैं कि वह अब रोज 40 रुपये और 1 घंटे का समय बचाती हैं। वह कहती हैं, 'मेरी उपस्थिति भी दोगुनी हो गई है।' रिटायर्ड टीचर विष्णु दत्त कहते हैं कि अब उन्हें इस बात कि फिक्र नहीं होती कि उनकी तीनों बेटियां कॉलेज से घर कैसे पहुंचेंगी।

इस इलाके में जहां पैरंट्स अपनी बच्चियों की सुरक्षा के लिए चिंतित रहते हैं वहां एक बस ड्राइवर को चुनना भी बेहद सावधानी भरा काम था। ड्राइवर की नौकरी के लिए रामेश्वर के पास पड़ोसी गांवों के 4 ड्राइवरों ने आवेदन किया। उन्होंने बस सर्विस के लिए रजिस्टर करने वाले 37 लड़कियों के अभिवावकों से चारों में से किसी एक ड्राइवर को चुनने को कहा। उनमें से लगभग 34 ने लक्ष्मण सिंह का नाम लिया। अब यह संख्या 62 हो गई है।

अब प्राइवेट क्लिनिक चलाते हैं रामेश्वर

ड्राइवर को सचेत किया गया है कि किसी भी पुरुष को बस में चढ़ने न दिया जाए। रामेश्वर कहते हैं, 'मैं भी बस में नहीं चढ़ता। एक बार तो लड़कियों को घर छोड़ते वक्त ड्राइवर ने मुझे भी सड़क पर नजरअंदाज किया। मैंने खुश होकर उसे 100 रुपये का इनाम दिया।' पिछले साल जुलाई में सरकारी सेवा से रिटायर होने के बाद डॉक्टर नीम का थाना से करीब 50 किमी दूर एक प्राइवेट क्लिनिक चलाते हैं। हालांकि वह रोड टैक्स देने पर दुखी नजर आते हैं।

बस सर्विस से मिली लड़कियों को सपनों की उड़ान

वह कहते हैं, 'मैं हर महीने ड्राइवर, कंडक्टर सहित डीजल के पैसे के लिए 36 हजार रुपये खर्च करता हूं। अथॉरिटी ने टोल माफ कर दिया था लेकिन फिर भी मुझे 5 हजार रुपये हर महीने रोड टैक्स देना पड़ता है।' वह कहते हैं, 'मैंने अथॉरिटी को टैक्स माफ करने के लिए पत्र लिखा है लेकिन यह बेकार गया।'

बस सर्विस को अब एक साल पूरे हो चुके हैं और कई लड़कियों ने अपने सपनों की उड़ान भरनी शुरू कर दी है। बनेती की पूजा दिल्ली पुलिस में शामिल होना चाहती हैं। अमन नर्स बनना चाहती हैं। काजल आर्मी जॉइन करना चाहती हैं। यह एक संदेश है। वह कहते हैं, 'मैं चाहता हूं कि यह बस दूसरों को कुछ सकारात्मक करने के लिए प्रेरित करे। रामेश्वर खुद 12 साल पुरानी मारुति 800 चलाते हैं।'

साभार- नवभारत टाइम्स से